# नीलगाय के प्रकोप से फसलों को बचाने की कारगर तकनीक

अनिल कुमार सिंह

“नीलगाय का कृषि एवं बागवानी फसलों पर आक्रमण दिन प्रति दिन बढ़ता ही जा रहा है। पहले नीलगाय यदा-कदा अपने प्राकृतिक वातावरण से भूलवश भटक कर ग्रामीण परिवेश मे आ जाते थे। परन्तु अब तो ये प्रायः दिखाई पड़ने लगे। नीलगाय मूलतः रात्रिचर हैं। और फसलों पर इनका आक्रमण संध्या या तड़के भोर मे होता था, परन्तु अब प्राकृतिक वातावरण में तेजी से कमी होने के कारण नीलगायों का दिन में भी दिखना बहुत आम बात हो गयी है। हालत यह है कि नीलगाय के दर्शन कहीं भी एवं कभी भी हो जाते हैं। नीलगाय का आक्रमण फसल को किसी भी अवस्था में तहस-नहस करने की क्षमता रखता है। जिन क्षेत्रों मे नीलगाय का प्रकोप होता है, वहाँ पर जरा सी लपरवाही होने पर सारी मेहनत पर पानी फिर सकता है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि नीलगाय का आतंक नित नये-नये कृषि क्षेत्रों में बढ़ता जा रहा है। प्रस्तुत लेख में नीलगाय के जीवनवृत, कृषि एवं बागवानी को उनके आक्रमण से बचाव के उपाय पर चर्चा की गयी है।”

गेहूँ की फसल में विचरण करते हुए नीलगाय का झुण्ड

## परिचय

नीलगाय को अँग्रेजी भाषा में ब्लू बुल कहते हैं और हिन्दी में रोज, घड़रोज, घोड़प्राश, गुरॉय बन गऊए आदि नामों से भी जाना जाता है। यह हिरन का सबसे निकटतम संबंधी है। नीलगाय की उत्पत्ति स्थान भारतीय उपमहाद्वीप है। यह मुख्य रुप से भारत, पाकिस्तान, नेपाल में पाया जाता है। परन्तु अब यह विश्व के अन्य प्रमुख कृषि प्रधान देशों में पाये जाने लगे हैं। विगत एक शताब्दी में ही यहाँ से नीलगाय विभिन्न भागों में गये है। नीलगाय का सर्वप्रथम विवरण पाल्लास ने सन् 1766 मे किया था इसका वैज्ञानिक नाम वोसेलेफस ट्रागोकेलमस है, जो कि दो भाषाओं के चार शब्दों से मिलकर बना है। पहला शब्द लैटिन भाषा का बौस है, जिसका अर्थ वैल से है इल्फास ग्रीक भाषा का एक शब्द है जिसका अर्थ हिरन है। तीसरा एवं चौथा शब्द भी ग्रीक भाषा से लिया गया है। ट्रागोस जिसका मतलब बकरा होता है, एवं चौथा शब्द केमलोस जिसका अभिप्राय ऊँट होता है। नीलगाय के जन्तु वैज्ञानिक नाम से ही इसका शारीरिक बनावट का पूरा विवरण मिल जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि एक ऐसा जानवर जो कि हिरण की तरह हो, बकरे की शक्ल से मिलता जुलता हो तथा ऊँट की भाँति शारीरिक संरचना हो। नीलगाय नाम इसके नर के भूरे नीले रंग के होने के कारण ही पड़ा होगा। मादाऐं प्रायः भूरे रंग की होती हैं। ये देखने में गाय जैसी ही लगती हैं। इसलिए देश के कई भागों में लोग इसे पूज्यनीय मानते हैं। यह चौपाया प्रायः भारतीय उपमहाद्वीप में ही पाया जाता है, और देखने में यह गाय जैसा ही लगाता है इस कारण से इस जानवर को भारतीय कानून से संरक्षण प्राप्त हैं। और विश्व वन्यजीव प्राधिकरण के द्वारा समाप्तशील वन्य जीव प्राणी के रुप में अभी चिह्नित नहीं किया गया है। फिर भी इनके संरक्षण पर भारत सरकार काफी गंभीर है। नीलगाय द्धारा कृषि मे क्षति पहुँचाए जाने के कारण ही इसके विषय मे चर्चा करने से पहले सर्वप्रथम हम इनके स्वभाव जीवनवृत्त, रहन–सहन, प्रजनन एवं आहार पर चर्चा करेगें, ताकि नीलगाय के व्यवहार पर एक समग्र विचार प्रतिपादित हो सके। यह अनुभव किया गया है कि नीलगाय का आंतक पहले सीमित क्षेत्र में था परन्तु वर्तमान में विकराल रुप धारण करता जा रहा है। नीलगाय का प्रकोप प्रायः सभी राज्यों में है, परन्तु जो भूभाग जगंल की सीमा के निकट है वहाँ पर इनका प्रकोप कुछ ज्यादा ही होता जा रहा हैं।

## स्वभाव एवं रहन–सहन

नीलगाय प्रायः सभी प्रकार की जलवायु वातावरण में पाये जाते हैं। ये हिमालय की

प्रधान वैज्ञानिक,
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना, बिहार

तलहटी से लेकर पूरे भारत में पाये जाते हैं। ये पहाड़ी स्थानों से लेकर विरल जंगलों मे भी पाये जाते हैं। परन्तु ये सघन जंगल में कम ही विचरण करते हैं। नीलगाय एक सामाजिक जानवर है और ये प्रायः झुण्डों में (औसतन 10–12 जानवर) पाये जाते हैं। परन्तु कभी–कभी 20–70 जानवरों को भी एक झुण्ड में देखा गया है। यह स्वभाव से दिनचर होते है। परन्तु इनका आक्रमण अंधेरे में तडके सुबह या शाम के वक्त ज्यादा देखा जाता है। इनकी देखने एवं सुनने की क्षमता अद्भुत होती है। जो कि इनके सूंघने की कम क्षमता को पूर्णतः प्रदान करती है। ये स्वभाव से मूलतः शान्तिप्रिय होते है। नीलगाय अच्छे बुरे का संकेत संवाद के द्वारा ही करते हैं। जिसके लिए सुविचारित स्वर भाषा है। जब जंगली जानवरों से खतरा होता है तो वो "बोह– बोह" की गर्जना करते है। नीलगाय का शिकार शेर, बाघ एवं तेन्दूए कर सकते हैं, परन्तु नीलगाय शेर को छोड़ कर बाघ एवं तेन्दुए की शायद ही चिन्ता करते हैं। यही कारण है नीलगाय घनघोर जंगलों में नहीं पाये जाते हैं।

पूर्णरुप से वयस्क नर की औसत लम्बाई 180 से 200 सेमी एवं ऊँचाई 130–150 सेमी (कन्धे तक) होती है। तथा इसका औसत वजन 200–240 किलो ग्राम का होता है। एक नर 30 माह मे प्रजनन के योग्य हो जात है। परन्तु प्रथम सहवास का मौका प्रायः 3–4 वर्ष की आयु के बाद ही मिल पाता है। नर नीलगाय की ही 12–15 से.मी. लम्बी दाढ़ी एवं 15–25 से. मी. लम्बे सीग पाये जाते हैं, जो कि इतने बड़े जानवर के लिए किसी ज्यादा काम के नहीं होते हैं। शरीर भूरा नीले रंग का है। नीलगाय की मादाओं की औसत लम्बाई 150 से 180 से. मी. तक होती है एवं ऊँचाई 120 से 135 से.मी. (कन्धे तक) तथा इनका औसत भार 120 से 180 किलो ग्राम तक होता है। मादाएँ मात्र 18 माह में ही गर्भधारण की क्षमता प्राप्त कर लेती है। परन्तु प्रथम सहवास तक इनकी औसत आयु तीन साल हो जाती है।

प्राकृतिक वातावरण में विचरण करते मादा नीलगाय एवं उसके बच्चे

नीलगाय की औसत आयु 20–25 वर्ष की होती है। नीलगाय की औसत गति 30 किलो मीटर प्रति घण्टे तक की होती है। परन्तु संकटकालीन अवस्था में इनकी अधिकतम रफ्तार 50 किलोमीटर प्रति घण्टे तक भी हो जाती है।

**प्रजनन**

सामान्यतः नर एवं मादा (झुण्ड में) अलग अलग विचरण करते हैं और प्रजनन काल में नर मादाओं के समीप आते हैं। प्रायः एक नर कई–कई मादाओं के साथ सहवास करता है। औसतन 8–10 मादाओं के झुण्ड पर एक नर का प्रभुत्व एवं स्वामित्व होता है। नर अपने इलाके या झुण्ड की तो परवाह नहीं करता है, परन्तु एक विचित्र आदत नर नीलगाय में देखी गयी है ये प्रायः अपने निवास के चारो तरफ अपने ही गोबर का ढ़ेर लगाता है, जिसका सामाजिक एवं क्षेत्रीय औचित्य पूर्णतया समझा

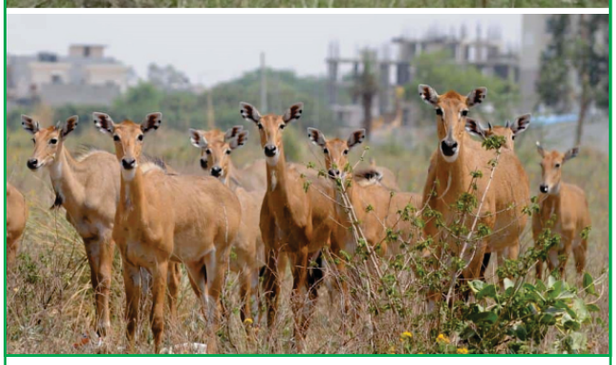

प्राकृतिक वातावरण में विचरण करता नीलगायों का झुण्ड

**नीलगाय तथ्य एक नजर में**

| | |
|---|---|
| उत्पति स्थान | : भारतीय उप महाद्वीप |
| औसत जीवन काल | : 20––25 वर्ष |
| त्वचा का रंग | : नर – नीला भूरा<br>मादा – भूरा |
| जन्म के समय बच्चे की औसत भार | : 6.5 किलो ग्राम |
| औसत भार | : नर –200 से 240 किलो ग्राम<br>मादा–130 से 180 किलो ग्राम |
| औसत ऊँचाई (कन्धे तक) | : नर– 130 से 150 से. मी.<br>मादा–120 से 135 से. मी. |
| औसत लम्बाई | : नर – 180 से 200 से. मी.<br>मादा–150 से 180 से. मी. |
| प्रजनन योग्यता पर आयु | : नर– 25 माह<br>मादा–18 माह |
| प्रथम मिलन पर औसत आयु | : नर– 40 से 45 माह<br>मादा– 28 से 32 माह |
| गर्भ धारण पर औसत आयु | : 30 से 38 माह |
| गर्भकाल | : 240 से 258 दिन<br>औसत (255 दिन) |
| प्रति व्यात बच्चों की सख्या | : 1 से 3 |
| प्रति व्यात बच्चों की औसत संख्या | : 1.4 |
| दो व्यात के बीच का अंतराल | : एक वर्ष |

प्राकृतिक वातावरण में विचरण करते नर नीलगाय

नही जा सका है। सामान्यतः नीलगाय में प्रजनन प्रायः वर्ष भर चलता रहता है परन्तु दिसम्बर से मार्च के महीने में ज्यादा होता है। नीलगाय की मादायें वर्ष में कई बार 'ऋतुमयी होती है। गर्भ न ठहरने पर पुनः 19–20 दिनों के बाद ऋतुमयी हो जाती है। नीलगाय का गर्भावस्था काल 240– 258 दिनों का (औसतन 255 दिन) होता है। नीलगाय प्रायः एक से दो बच्चे प्रति व्यात् देती है। परन्तु कभी–कभी तीन बच्चे भी पैदा होते देखे गये हैं। नीलगाय सामान्यत एक साल में एक बार ही बच्चे देती हैं और दो व्यात का अन्तर कम से कम एक साल का होता ही है। जन्म के समय बच्चे का औसत वजन 5.5 से 6.5 किलो ग्राम तक होता है।

**कृषि में नीलगाय का महत्व**

नीलगाय एक शाकाहारी जीव है यह मुख्यतः नाना प्रकार की घासों एवं पत्तों पर ही अपना जीवन निर्वाह करता है। यह पेड़ों के पत्ते फूल, फल बीज इत्यादि पर निर्भर रहता है। यह सभी प्रकार की वनस्पतियों को अपना भोजन बना लेता है। इनके प्राकृतिक आवास में दिन प्रति दिन आ रही कमी के फलस्वरुप ये अपना आवास, परिवेश एवं भोजन अभिरुचि में परिवर्तन करने को विवश हुआ है। नीलगाय दक्षिण एशिया में ही पाया जाता है एवं इसका मुख्य आवास विरल जंगल एवं चारागाह हैं, परन्तु अन्धाधुन्ध वनों की कटाई एवं अन्य प्रकार की भूमियों का कृषि हेतु उपयोग या मानव द्वारा निर्माण के लिए प्रयोग करने के कारण इनके आवास में आ रही कमी से विवश होकर यह जंगली जीव आज मानव बस्ती एवं कृषि क्षेत्रों में खुले आम विचरण करता दिखाई पड़ने लगा है पहले तक इक्का– दुक्का ही नजर आते थे, और फसल पर आक्रमण यदा–कदा रात के समय में ही करते थे। वर्तमान समय में ये दिन में भी बहुतायत में विचरण करते मिल जाते है। जलवायु मे हो रहे परिवर्तन के कारण नीलगाय के प्राकृतिक आवास एवं आहार नष्ट होते जा रहे है जिसके कारण मजबूर हो कर ये मानव बस्ती एवं कृषि क्षेत्रों मे पलायन कर रहे हैं। एक अध्ययन से पता चला है कि सामान्य परिस्थितियों में एक चारागाह की नीलगाय की पालन क्षमता 5–8 नीलगाय प्रति वर्ग किलोमीटर होती हैं जब इसकी क्षमता घट जाती है, तभी नीलगाय पलायन करते हैं। चूँकि ये सभी तरह की वनस्पतियों को अपना आहार बनाने में सक्षम हैं। इसलिए नीलगाय सभी प्रकार के फसलों को अपना निशाना बनाते हैं। परन्तु अधिकांशतः नुकसान धान, गेहूँ, मक्का, सरसों,

प्राकृतिक वातावरण में विचरण करते मादा नीलगाय

उर्द, मूँग मसूर, गन्ना, अरहर आदि फसल को पहुँचाते है। ये स्वभाव से रात्रिचर हैं, अतः इनका फसलों पर आक्रमण नए इलाकों में शाम या तड़के सुबह के समय होता हैं पर बहुत ही जल्द दिन के समय में भी खेत खलिहानों में नुकसान पहुँचाते नजर आने लगेंगे। नीलगाय फसल चरने के साथ– साथ उसको रौंद कर भी भारी नुकसान पहुँचाते हैं। नीलगाय फसल को किसी भी अवस्था में पूर्णतय बर्बाद करने की क्षमता रखते हैं। जहाँ पर नीलगायों का आतंक है, वहाँ पर फसलों की देखभाल में एक दिन की लापरवाही भी पूरे फसल काल के परिश्रम पर पानी फेर देती है।

**क्षति की प्रकृति**

नीलगाय सभी प्रकार की वनस्पतियों को अपना आहार बनाती हैं इसलिए फसलें भी इनके प्रकोप से बच नहीं पाती हैं। परन्तु जब ये कृषि एवं बागवानी फसलों पर कहर ढाती है तो इनका प्रमुख निशाना सब्जियाँ (टमाटर, फूल गोभी, पात गोभी, बैगन मिर्च) फलीदार फसल जैसे कि मटर, अरहर, चना, मसूर आदि को भोजन बनाना होता है। इनका कहर यहीं पर समाप्त नहीं हो जाता है, बल्कि ये बागवानी फसलों को भी भीषण नुकसान पहुँचाते हैं। आम, अमरुद, केला लीची एवं सभी प्रकार के फलों को चट करने मे नीलगाय जरा सी भी देर नहीं लगाती हैं। अगर फल इनकी सामान्य पहुँच में होते हैं तो खड़े होकर फलों को खाते हैं यदि फूल इनकी पहुँच से बाहर होते हैं तो ये घोड़े की तरह अपने पिछले पैरों पर खड़े हो जाते हैं। अनुभव में यह भी आया है कि यदि इससे भी ज्यादा ऊँचाई पर पेड़ों में फल लगे हों तो ये एक–दूसरे की पीठ पर चढ़ कर बारी– बारी से फलों का भक्षण करते हैं एवं बागवानी फसलों के नुकसान पहुँचाते हैं। ये फसल विशेषकर फलदार सब्जी एवं फलों को बड़ी ही सफाई से खाते हैं और देखने पर ऐसा प्रतीत होता है जैसे किसी व्यक्ति द्वारा फल या फलियों को नुकसान पहुँचाया गया हो। ऐसा इसलिये होता है, क्योंकि ये बहुत ही समझदार एवं सामाजिक जानवर है। नीलगाय के कहर से बचने हेतु सामाजिक जागरुकता एवं सामूहिक प्रयास नितांत ही आवश्यक है।

**नीलगाय के आक्रमण से कृषि (फसलों) के बचाने के उपाय**

नीलगाय का प्रिय भोजन सब्जियाँ, फलीदार फसल, खाद्यान्न एवं दलहनी फसलें जैसे कि मटर, अरहर,चना,मसूर है। नीलगाय एक सामाजिक प्राणी है एवं प्रायः नर को छोड़कर पूरा समुदाय (मादाऐं एवं बच्चे) एक साथ झुण्डों में रहता है। फसल पर आक्रमण भी झुण्डों में ही करते है जिससे देखते ही देखते खेत की पूरी फसल थोड़ी ही देर मे चौपट हो जाती है। कभी–कभी तो ज्यादा नुकसान नीलगाय के झुण्डों में घूमने के कारण या भगदड़ से रौंदने के कारण हो जाता है। नीलगाय एक बलशाली जानवर है और झुण्ड में रहते हैं। फसलों को इनके आक्रमण से बचाव हेतु कोई एकल उपाय ज्यादा लाभदायक साबित नहीं हो सकता है। इसलिए एकीकृत एवं समन्वित उपायों को उपयोग में लाकर कृषि को बचाया जा सकता है साथ ही साथ नीलगाय का समुचित संरक्षण भी किया जा सकता है। नीलगाय से कृषि फसलों को बचाने हेतु निम्न उपाय अपनाये जा सकते है।

**(1) नीलगाय के प्राकृतिक आवास की सुरक्षा**

नीलगाय प्राकृतिक तौर पर प्रायः चारागाह या कृषि आयोग्य भूमि एवं विरले वनों में पाये जाते है। परन्तु विकास का अन्धानुकरण से चारागाह, वन एवं आयोग्य भूमियाँ दिन–दूने एवं रात चौगुने रफ्तार से खत्म होती जा रही हैं, जिससे विवश होकर नीलगाय गाँवों एवं शहरों की तरफ पलायन करने लगे हैं। यदि हम थोड़ा सा सचेत हो जायें और उनके प्राकृतिक आवास की सुरक्षा करे और उन्हें उनके प्राकृतिक आवास उसी तरह प्रदान कर दें तो उनका गाँवों एवं मानव बस्ती की ओर पलायन रुक जायेगा और हमारी फसल नीलगाय के प्रकोप से बच जायेगी। साथ ही साथ इस प्रजाति को संरक्षण भी मिल जायेगा। यह एक सशक्त तरीका है जिसमें बहुत सारा समय, पैसा एंव संयम (धैर्य) की जरुरत होगी अतः इस विधि का प्रयोग निहायत ही जरूरी है। इसमें साथ ही साथ–अन्य साधनों का प्रयोग उद्देश्य की पूर्ति में गति प्रदान करता है।

**(2) कृषि प्रक्षेत्र की चारदीवारी**

नीलगाय एक बहुत ही मजबूत फुर्तीला एवं तेज दौड़ने वाला चौपाया है। अतः फसल को बचाने के लिए सबसे अच्छा तरीका कृषि प्रक्षेत्र की चारदीवारी करना है। चार दीवारों की ऊँचाई कम से कम 7–8 फीट अवश्य ही रखे क्योंकि यह जानवर 5–6 फीट की ऊँचाई बड़े ही आराम से लाँघ जाता है। यह तरीका थोड़ा खर्चीला है। इसलिए सभी किसान भाई इसे अपनाने मे हिचकिचाते है। परन्तु ध्यान देने योग्य बात यह है कि इसमे सिर्फ एक बार ही निवेश करना पड़ता है और फसलों को नीलगाय एवं अन्य आवारा जानवरों से दीर्घकालीन सुरक्षा मिल जाती है। तथा उत्पादकता बढ़ाने में कारगर होती है। यदि बिजली की व्यवस्था हो तो 220 वोल्ट की धारा प्रवाह करने से नीलगाय, आवारा पशु एवं अन्य जगंली जानवरों को भी झटका लगता है। परिणामस्वरुप नीलगाय एवं अन्य जंगली पशु दुबारा उस प्रक्षेत्र पर नहीं आता है।

**(3) फसलों की पहरेदारी**

फसल प्रक्षेत्र की चारदीवारी कराने मे किसान

प्रशिक्षित कुत्तों द्वारा रखवाली एवं नीलगाय को प्रक्षेत्र से दूर भगाना

नीलगायों को मूल परिवेश में भेजने हेतु पकड़ एवं प्रबंधन

भाई यदि किसी कारणवश असमर्थ हों तो वे फसलों की सुरक्षा स्वयं ही करें। ध्यान देने योग्य बात यह है कि नीलगाय का आक्रमण झुण्डों में एवं तड़के सुबह या शाम को ही होता है। इसलिए फसल सुरक्षा की दृष्टि से तड़के सुबह तीन बजे से सूरज निकलने तक एवं शाम में सूरज डूबने के बाद एवं चाँदनी उगने तक का समय बहुत ही महत्वपूर्ण हैं नीलगाय के प्रकृति की विवेचना करने से यह ज्ञात होता है कि कृष्ण पक्ष में जब रातें ज्यादा काली होती हैं तब इनका कहर अपेक्षाकृत थोड़ा ज्यादा ही हो जाता है इसलिये इस समय खेतों की विशेष निगरानी की आवश्यकता होती है।

**(4) प्रशिक्षित कुत्तों को रखवाली में लगाना**

जहाँ पर नीलगाय का आतंक अधिकांशतः होता रहता है, वहाँ पर मानव द्वारा पहरेदारी में जरा सी चूक पूरे फसलावधि मे की गयी मेहनत पर पानी फेर सकती है। अतः इस समस्या से बचने हेतु सबसे उत्तम तरीका प्रशिक्षण प्राप्त कुत्तों को रखवाली मे लगाना है। कुत्ते प्रशिक्षण के बाद रखवाली के लिए प्रशिक्षित हो जाते है एवं नीलगाय आवारा पशु तथा अन्य जंगली जानवरों की जरा ही आहट पाते ही भौंकने लगते हैं। जानवरों का झुण्ड कुत्तों के शोर को सुन कर खुद भाग जाता है या किसान उन्हें खदेड़ कर प्रक्षेत्र से दूर कर देते हैं।

**(5) नीलगायों का जैविक रोकथाम**

नीलगाय के आंतक से निजात पाने के लिए जैविक तरीका भी अपनाया जा सकता हैं। इस विधि में सारे नरों को पकड़ कर उनका बधियाकरण रसायन के प्रयोग से, प्राकृतिक या शल्य विधि द्वारा किया जा सकता है। अगर जरुरत पड़े तो मादाओं को भी बांझ बना कर उनकी जनसंख्या को एक निश्चित सीमा में रखा जा सकता है। ऐसा करने से कृषि को नीलगाय के आतंक से ही नहीं बचाया जा सकता है बल्कि नीलगाय को भी पूर्णतया विलुप्त होने से बचाया जा सकता है। अत्याधिक आखेट के कारण बांग्लादेश से इस चौपाये का पूर्णतयः सफाया हो चुका है।

**(6) नीलगायों को उनके मूल परिवेश मे भेजना**

नीलगायों के आतंक से फसलों को बचाने का एक सुगम उपाय यह भी है कि सभी जानवरों को पकड़ कर दूर कहीं प्राकृतिक आवास में जैसे कि किसी जंगल या प्राकृतिक चारागाह में छोड़ आए, ऐसा करने से नीलगायों का अपना नैसैर्गिक आवास एवं आहार दोनों मिल जाते है, एवं फसलों को भी नुकसान नहीं पहुँचता है। इससे फसल एवं नीलगाय दोनों को संरक्षण मिलता है।

**(7) नीलगायों का बध**

नीलगायों का आतंक यदि सारी हदें पार कर जाये तो उनको उनकी उचित संख्या को बरकरार रखते हुऐ (एक नर पर 8–10 मादा प्रति पाँच वर्ग किलोमीटर पर शेष सभी नीलगायों का बध करना ठीक हो सकता है। परन्तु इस प्रक्रिया को अपनाने से पहले संबंधित अधिकारी से आवश्यक प्रमाण पत्र अवश्य प्राप्त कर लें। क्योंकि नीलगाय को भी गाय जैसा संरक्षण भारत देश में प्राप्त है।

**(8) नीलगायों को मानव निर्मित चारागाह मे छोडना**

नीलगायों को पकड़ के उनके निवास स्थान यथा जगंल एवं चरागाह आदि में छोड़ना यदि संभव ना हो, तो मानव निर्मित चारागाहों एवं बाडा आदि में डाल देना चाहिए जो कि पहले से ही घेराबन्दी करके रखा गया हो ताकि नीलगाय उस घेरे, क्षेत्र, चरागाह से वापस दुबारा कृषि क्षेत्रों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में भ्रमण न करें, फलस्वरुप नुकसान भी न कर सके।

**(9) पटाखे एवं आग जलाना**

अनुभव में आया यह आया है कि नीलगाय को आक्रमण, प्रक्षेत्र (खेतों में) पर, कृष्ण पक्ष के दिनों में ज्यादा होता है जबकी शुक्ल पक्ष के समय थोड़ी राहत रहती है। अतः जैसे ही नीलगायों के झुण्ड या इक्का–दुक्का ही नजर आयें तो तुरन्त ही मशाल जलाकर उन्हें डरायें, विशेष कर शाम या रात के समय (सूरज छिपने के बाद एवं निकलने से पहले) ऐसा करने से ये जानवर भयभीत हो जाते हैं और डर कर उस क्षेत्र में घूमना बन्द कर देते हैं। जैसे ही यह चौपाया दिखाई पड़े (विशेषकर झुण्डों में) तब पटाखे जलाने पर यह जानवर डर कर भाग जाते हैं और दुबारा उस क्षेत्र में काफी दिनों तक दिखाई नहीं पड़ते हैं।

**(10) सामाजिक जागरुकता क्षेत्र में नीलगाय समिति**

नील गाय का प्रकोप सीमित क्षेत्र में नहीं होता है बल्कि इसके आक्रमण से हजारों हेक्टेयर की फसल को क्षति पहुँचती है। इनके आक्रमण से एक साथ कई गाँव चपेट में आ जाते है। अतः नीलगाय के विषय में जानकारी रखना, सबको जागरुक बनाना एवं नीलगाय समिति का गठन एक मील का पत्थर साबित हो सकता है। क्योंकि कहावत भी है कि जानकारी से ही बचाव संभव है एवं बचाव में ही निदान है।

**(11) देशी तकनीक को भी आजमाऐ एवं सुरक्षा पायें**

**जावा सिट्रोनेला एवं पाल्मा रोजा का प्रयोग**

इसका प्रयोग फसल के चारों तरफ बाड़ के रूप में करते हैं नीलगाय इसकी सुगंध से दूर भागते हैं क्योंकि उनको इसकी गंध अच्छी नहीं लगती है। गलती से अगर ये इनके पत्तों को खाने की कोशिश करें तो उसके मुँह में धारदार पत्तियों के कारण घाव बन जाते है और वो दुबारा इस फसल की ओर मुड़कर भी नहीं देखते है।

**सड़े अण्डे के घोल का प्रयोग**

अनुभव में आया है कि वो अण्डे जो सड़ जाते है और खाने के योग्य नहीं रह जाते है उन अण्डों का प्रयोग हम नीलगाय से फसलों को बचाने के लिए कर सकते है। इन अण्डों का प्रयोग घोल बनाकर खड़ी फसलों पर करे। एक छिड़काव से दूसरे छिड़काव के बीच 10–15 दिन का अन्तर रखें। सड़े अण्डे के बदबू के कारण नीलगाय फसलों के पास आना पसंद नहीं करती हैं और फसल नीलगाय के प्रकोप से बच जाती है।

**मानव का पुतला बनाकर खेतों में खड़ा करना**

खेतों मे किसान भाई उचित अन्तराल पर बास की फट्टियों या लकडियों के सहारे से पुआल या घास–फूस की सहायता से मानव पुतला बनाकर उसे पुराना कपड़ा पहना दे एवं मिट्टी का खराब घड़ा टाग दे ताकि देखने में बिल्कुल मानव जैसा ही लगे, जिसे देखकर नीलगाय को मनुष्य की मौजूदगी का अभास होगा एवं खेत से भाग खड़ी होगी।

ज्ञात हो कि नीलगाय की देखने एवं सुनने की क्षमता तो ठीक है परन्तु सूंघने की क्षमता उतनी अच्छी नही होती है। और इस विधि मे नीलगाय के इसी कमजोरी का फायदा उठाया जाता है। नीलगाय मनुष्यों को देखकर ही दूर भाग जाती है और यही कारण है कि यह पहले दिनों में ग्रामीण क्षेत्रों मे कम ही नजर आते थे।

**गेंदा के पौधे मेड़ पर रोपना**

गेंदा के पौधे भी रात में शाल या कपड़े लपेटे मानव आकृति के तरह ही दिखाई पड़ते हैं, और उसके फूल मानव का भ्रम पैदा करते है। जिसके कारण नीलगाय उस खेत में भ्रमण नहीं करते हैं। अतः मेड़ पर उचित अन्तराल पे गेंदों लगाता दलहन एव तिलहन की रवी फसलों में विशेष उपयोगी देखा गया है। गेदों के फूल में कोई विशेष सुगन्ध नहीं होती है और न ही इस जानवर में तीव्र ध्राण क्षमता ही होती है। इन दोनों विशेषताओं के कारण ही यह विधि कारगर होती है। इस हेतु गेंदों के पौधे 4–5 फीट लम्बे साथ ही साथ स्वस्थ भी हो तो ऐसा होने पर पौधे मानव जैसा ही लगते है।

**नीलगाय के गोबर के घोल का फसलों पर छिड़काव**

अनुभव में आया है कि जिन पौधों पर नीलगाय का गोबर लगा होता है उन पर वह दुबारा विचरण नहीं करती है। इसी तथ्य के ध्यान में रख कर एक परीक्षण किया गया जिसमें उनके गोबर के घोल का फसलों पर छिड़काव किया गया जिसका प्रभाव 10–15 दिनों तक देखा गया। अतः 10–15 दिनों के अन्तराल पर नीलगाय के गोबर के घोल का छिड़काव करें तो फसलों को नुक्सान से बचाया जा सकता है।

ग्रामीणों द्वारा गुणवक्तायुक्त मांस हेतु नीलगाय का आखेट

**नीलमणि का उपयोग**

अभी हाल मे एक गैर सरकारी कम्पनी जो कृषि से संबंधित कीटनाशक का उत्पादन करती है, ने दावा किया है कि उसके द्वारा उत्पादित नीलमणि नामक रसायन का छिड़काव खड़ी फसल मे करने से इसका प्रभाव पतियों पर 10–12 दिनों तक बना रहता है। नीलमणि नामक रसायन का उपयोग रसायन द्रव के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसकी पैकिंग 50 मिली लीटर 100 मिली लीटर 200 मिली लीटर एवं 500 मिली लीटर इसकी पैकिंग में होती है। कम्पनी का दावा है कि दवा छिड़की पत्ती को जैसे ही नीलगाय खाती है पत्ती में उपलब्ध रसायन उसके मुँह में मौजूद एन्जाइमों से प्रतिक्रिया कर उसके जबड़ों को जाम कर देता है जिससे वह और हानि नहीं पहुँचा पाता है।

**रफूचक्कर का उपयोग**

रफूचक्कर नामक रसायन का प्रयोग धूल के रूप में होता है एक पैकेट 25 किग्रा की होती है। इसका प्रयोग खड़ी फसल में करते हैं। इस रसायन का असर 10–15 दिनों तक बना रहता है।

**नीलगाय की उपयोगिता**

**नीलगाय का खेती के कार्यों में उपयोग**

इतिहास गवाह है कि प्रशिक्षिण के माध्यम से विभिन्न प्रकार के जंगली जानवरों को मानव ने अपने बस में करके उनसे मनचाहा काम लिया है। इस कड़ी में नीलगाय अपवाद नहीं हो सकता है। नीलगाय को प्रशिक्षित करके हम उनके ऊर्जा का प्रयोग कृषि एवं अन्य उपयोग में ला सकते है। इनका प्रयोग हम खतों की जुताई में एवं ढुलाई में कर सकते हैं। यदि हम ऐसा करने में सफल रहे तो नीलगाय का हम सदुपयोग कर सकेंगे। इसके लिए इस चौपाए की धैर्यपूर्वक प्रशिक्षिण की नितांत आवश्यकता है।

इस चौपाए के प्रशिक्षिण के मामले में मलेशिया में सफल प्रयोग हो चुका है। मलेशिया में इस जानवर का प्रयोग खेती के विभिन्न कार्यों में सफलतापूर्वक किया जा रहा है।

**उच्च गुणवक्तायुक्त मांस**

नीलगाय में सारी बुराइयाँ ही नहीं है अपितु इनमें कुछ अच्छाइयाँ भी है। इसकी प्रमुख अच्छाई इसके द्वारा प्रदत्त उच्च गुणवक्तायुक्त मांस है, जिसके कारण चोरी चुपके इसका आखेट होता चला आ रहा है। भारतवर्ष के कुछ प्रान्तों के कुछ क्षेत्रों में ये प्राणी विलुप्त प्रायः हो गया है। बांग्लादेश में तो अब यह जानवर मात्र चिड़ियाघरों में ही शोभा बढ़ा रहे हैं।

**निष्कर्ष**

नीलगायों का प्रकोप कृषि क्षेत्र पर लगातार बढ़ता जा रहा है। एवं नित नये–नये क्षेत्रों में आतंक फैला रहे हैं। जिससे कृषि एवं बागवानी फसलों को भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है। इनकी कद काठी एव फुर्तीला शरीर सामान्य ऊँचाई को कोई बड़ी चुनौती नहीं मानता है। आज समय की जरूरत है कि नीलगायों को उनके मूल आवास पर वापस भेजना जिससे कृषि पर उनकी निर्भरता कम हो सके। इस विशाल जानवर को विषमान द्वारा हत्या कहीं से भी तर्क संगत नहीं है अपितु बुद्विमानी तो इसमें है कि खेतों की चारदीवारी की जाय, नीलगायों के लिए प्राकृतिक चारागाह तैयार कराये जाएँ एवं उनको बन्दी करके उसी में रखा जाय। जब तक ये नेक कदम नहीं उठा लिए जाते तब तक कृषि क्षेत्र की पहरेदारी मानव एवं कुत्ते के सहयोग के द्वारा ही करना श्रेष्ठकर है।